The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 10 | October 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

क्या भारतीय प्रतिभाशाली नहीं हैं?

डॉ0 प्रशान्त कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर

ईमेल आईडी - drpktrivedi01@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

औपनिवेशिक मानसिकता, प्रतिभाशाली, सांस्कृतिक एकता, आर्थिक समृद्धि,स्वदेशी

DOI:

10.5281/zenodo.14171439

ABSTRACT

आज हमारे देश के लोगों में अपने संस्कृति,पहनावा, भाषा, खान-पान आदि के प्रति हीन भावना का विकास हो रहा है जो इस विचार पर आधारित है कि हमारा देश प्रतिभाशाली नहीं है, हमारा देश केवल पश्चिम की नकल कर रहा है, हमारे यहां कोई मौलिक आविष्कार या चिंतन नहीं है। लेकिन वास्तव में ऐसी बात नहीं है बल्कि हमारे देश में जो आज आत्मविश्वास की कमी दिखाई दे रही है, इसका कारण ऐतिहासिक है। मुस्लिम आक्रांताओं ने हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को भंग कर दिया तथा ब्रिटिश आक्रांताओं ने हमारा अत्यधिक आर्थिक शोषण किया, जिससे हम न केवल गरीब हो गए, बल्कि अपनी वैज्ञानिक सोच, सांस्कृतिक एकता और आर्थिक समृद्धि को भी भूल गए। जिस कारण हमें अपने अंदर केवल कमी नजर आती है। स्वतंत्रता के बाद भी हम औपनिवेशिक मानसिकता से स्वतंत्र नहीं हो पा रहे हैं जो कि हमारे लिए चिंता की बात है। अतः यदि हमें अपने देश को विकसित बनाना है तो हमें अपने इतिहास,संस्कृति, धर्म आदि पर गर्व करना होगा तथा इतिहास के द्वारा दिए गए जख्मों को भरना होगा। हमारा देश धीरे-धीरे आर्थिक रूप से समृद्ध हो रहा है लेकिन साथ ही उसे सांस्कृतिक एकता और अपनी संस्कृति और इतिहास पर भी गर्व करना होगा।

प्रस्तावना

आज हमारे देश में स्वदेशी, अपने धर्म अपनी भाषा, अपने ज्ञान-विज्ञान, अपने खानपान, पहनावे, अपनी संस्कृति और अपने विचार का बहुत ज्यादा मज़ाक उड़ाया जाता है। विदेशी वस्तुओं, भाषा, संस्कृति , विचार और धर्म की बड़ी प्रशंसा की जाती है। इनके तरफ सब बहुत ज्यादा आकर्षित दिखते है। इतना ही नहीं यह भी कहा जाता है कि हमारे देश में कुछ अविष्कृत ही नहीं हुआ है। सब हमने विदेश से ही लिया है। अर्थात हमारे अंदर वैसी प्रतिभा ही नहीं है कि हम नया अविष्कार कर सकें। प्रश्न है क्या सच में हम केवल उधार का लेकर जीवन जी रहे हैं? केवल दिल ही हिंदुस्तानी है बस और हम अविष्कार कर ही नहीं सकते। हमारे अंदर ऐसी क्षमता ही नहीं है। या हम विदेशी वस्तुएं उपयोग तो कर रहे हैं, यह बात सही है, लेकिन हमारे अंदर नई तकनीकि ईजाद करने की क्षमता है किन्तु कुछ ऐसे कारक है जिस कारण हम अक्षम दिख रहे हैं? मुझे लगता है दूसरी दृष्टि ज्यादा ठीक है। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इतिहास हमें यही बताता है।

प्राचीन संवृद्ध भारत

अगर हम प्राचीन काल में देखे तो कौटिल्य, याज्ञवल्क्य, व्यास, महात्मा बुद्ध,महावीर जैसे विचारक, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, जैसे वैज्ञानिक, कालिदास, पाणिनि, वाल्मीकि जैसे साहित्यकार, अनेक वास्तुविद, शिक्षक, कलाकार, मूर्तिकार आदि पैदा हुए। उस समय के किसी अन्य सभ्यता जैसे मिश्र, यूनान, चीन आदि से हमारे यहां कम विकास नहीं हुआ था। क्योंकि उस समय हम स्वतंत्र होकर सोच रहे थे। हम अपने को हीन भाव से ग्रस्त नहीं किये हुए थे।हम ज्ञान विज्ञान,संस्कृति, विचार और तकनीकि के लिए किसी अन्य देश की तरफ नहीं देखते थे हमारे अंदर आत्मविश्वास था। इसीलिए मौर्य साम्राज्य जैसा बड़ा साम्राज्य खड़ा कर पाए। अंतरिक्षविज्ञान,चिकित्सा, वास्तुकला, मूर्तिकला, साहित्य आदि क्षेत्र में आगे बढ़ पाए। इस समय सामाजिक कुरीतियां भी अल्प थी और महिलाओं की स्थिति भी अच्छी थी समाज में। समाज का विभाजन नहीं था।
यह वह समय था जब भारतीय समाज का उपनिवेशवाद के द्वारा न तो आर्थिक शोषण हुआ था और न ही विदेशी धर्म और संस्कृति से समाज का विभाजन ही हुआ था। न सांस्कृतिक उपनिवेशवाद ही था। इस समय भी विदेशी आक्रमण देश में हुए, लेकिन ये आक्रांता यथा यवन, शक, कुषाण आदि या तो हार गए या अगर राजनीतिक रूप से जीते भी तो भारतीय संस्कृति में घुलमिल कर यहीं के हो गए। इन्होंने न तो अपनी अलग पहचान बनाने पर जोर दिया और न ही यहां से पूंजी और वस्तुएं ही विदेश ले गए। इसलिए ये भले ही राजनीतिक शक्ति प्राप्त कर लिए हों लेकिन न तो बाहर गए कि

धन बाहर ले जाते और न ही अपनी पहचान पर जोर देकर भारतीय समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजन ही पैदा किया।

मध्यकाल में सांस्कृतिक एकता का खंडन और पुनर्निर्माण के प्रयास

लेकिन भारत की ये सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने तोड़ दिया और आर्थिक स्वतंत्रता को अंग्रेजी आक्रमणकारियों ने तोड़ दिया। इसलिये नहीं कि इस्लाम धर्म बुरा है या अच्छा बल्कि इसलिए क्योंकि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने अपने धर्म और संस्कृति की पहचान पर बहुत ज्यादा बल दिया। इतना ही नहीं ये भारतीय संस्कृति को नीचा दिखाने का प्रयास किया और जबरन धर्मांतरण कराए। इससे समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजन पैदा हो गया जो आज भी विद्यमान है। ये लोग जहां से आये वहीं की संस्कृति का पालन करने के लिए जोर दिया और अपने धर्म के प्रसार के लिए राजनीतिक तंत्र का भी उपयोग किया। और सूफियों द्वारा नैतिक पवित्रता और श्रेष्ठता का प्रदर्शन करके अनुनय विनय द्वारा भी इसका प्रसार किया गया। अच्छे राजाओं ने अपने अच्छे कार्य करके लोगों को इस ओर लुभाया। इन सब ने सामाजिक विभाजन की रेखा को लंबी और चौड़ी करना शुरू किया। जिसका अंग्रेजों ने भी फायदा उठाया और बाँटो और राज करो की नीति अपनायी। आज हमारे नेता गण उठा रहे है इसका फायदा वोट लेने के लिए।

खैर, इन आक्रमणकारियों के आने के बाद से ही भारतीय समाज के विद्वानों ने अपना सारा ध्यान ज्ञान -विज्ञान , कला, तकनीकि आदि में लगाने की बजाय समाज की एकता बनाने में लगा दिया। भक्ति आंदोलन इन्ही विद्वानों द्वारा किया गया। कबीर, नानक, रैदास, तुलसीदास आदि विद्वानों ने इसी कार्य में अपना योगदान दिया।ये विद्वान सामाजिक विभाजन की समस्या ना होती तो कोई अन्य रचनात्मक कार्य कर सकते थे। लेकिन ये लोग इतने अलग अलग मत के थे- कोई सगुण था कोई निर्गुण, कोई एक धर्म की बात करता था तो कोई सामंजस्य की। इसलिए ये एक बड़े सुधार को अंजाम नहीं दे पाए, जैसा कि यूरोप में मार्टिन लूथर आदि ने किया।

इसलिए भारतीय संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति के बीच सामंजस्य बैठने और भारतीय संस्कृति की सतता बनाये रखने का ये प्रयास बहुत प्रभावी नहीं रहा बल्कि नानक ने एक और विभाजन को जन्म दे दिया। इतना ही नहीं इन्ही आक्रमणकारियों ने ही हमे बताया की हम हिन्दू है। ये भारतीय संस्कृति को सीमित करने का एक कदम था। इसी समय पर्दाप्रथा, बाल विवाह जैसी अनेक सामाजिक समस्याओं को जन्म भी हुआ। कुछ कुरीतियों को मजबूती भी मिली, जो पहले से चली आ रहीं थी।

महिलाओं की स्थिति में गिरावट आयी। सबसे बड़ी बात भारतीय समाज में आत्मविश्वास की कमी हो गयी। राजनीतिक पराधीनता ने इसमे हीनभावना को जन्म दे दिया। इसी समय से हम विदेशी धर्म और संस्कृति की ओर झुकने लगे। अपने को तुक्ष्य मनाने की शुरुआत यहीं से हुई।लेकिन भारत अभी भी आर्थिक रूप में काफी सक्षम था।

अर्थव्यवस्था का नाश और पुनर्जागरण

18वीं सदी में भारत की अर्थव्यवस्था का आकर विश्व की अर्थव्यवस्था के आकर का 20-25% था। हमारे यहां के हस्तशिल्प उद्योग विकसित अवस्था में थे। पूरे विश्व में इनके उत्पादों की मांग थी। हां, हमारा समाज कृषि पर उतना निर्भर नहीं था जितना 1947 में था। अंग्रेजी औपनिवेशिक शोषण ने भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ तोड़ दी। न केवल विऔद्योगीकरण हुआ और हस्तशिल्प उद्योग नष्ट हुए बल्कि कृषि और ग्रामीण क्षेत्र में दबाव आ गया क्योंकि हस्तशिल्प के नष्ट होने से लोग बेरोजगार हो गए तो ग्रामीण क्षेत्र में वापस चले आये। ऋणग्रस्तता बहुत बढ़ गयी विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र में। कई विद्वान हमारा आदर्श ग्रामीण आत्मनिर्भरता को मानते है जबकि इतिहास इसके विपरीत है। हमारा विकास शहरों में ही हुआ था। ग्राम की तरफ लोगों का पलायन मजबूरी थी। इस शोषण ने भारतीय समाज की रही सही स्वतंत्रता और आत्मविश्वास को नष्ट कर दिया। अब यहां के लोग अपनी वस्तुओं, अपने धर्म, संस्कृति, भाषा, ज्ञान, विज्ञान, विचार, परंपरा आदि सब पर प्रश्न करने लगे और उसे पश्चिमी नजरिये से देखने लगे। राजा राम मोहन राय आदि लोगो ने यही किया। यद्यपि दयानन्द सरस्वती, विवेकानंद, बल गंगाधर तिलक आदि ने इसका विरोध किया लेकिन इनकी बात का भी बहुत सारे लोगों द्वारा या तो मजाक उड़ाया गया या तो गंभीरता से नहीं लिया गया। इन्हें पुनरुत्थानवादी कह कर इनकी सीमा तय कर दी गयी। थोड़ा बहुत रही सही कसर पश्चिमी ज्ञान विज्ञान और शिक्षा तथा भाषा ने पूरा कर दिया। पश्चिमी शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी भारतीय समाज को तुक्ष्य रूप में देखने लगा और पश्चिम को अपना आदर्श मान लिया।यहां रहना ही नापसंद करने लगा। यहीं से हम पश्चिमीकरण का शिकार होने लगे। हमारे अंदर अपने को तुक्ष्य मानने का विचार गहरा होता गया। और पश्चिम का हर चीज अच्छा लगने लगा। सही मायने में हम राजनीतिक और आर्थिक गुलाम से ज्यादा मानसिक गुलाम बनाने लगे।जो आज भी बढ़ ही रहा है।

अब भारत पर अनेक घाव हो चुके थे। न तो सामाजिक और सांस्कृतिक एकता ही राह गयी थी न ही आर्थिक उन्नति और राजनीतिक स्वतंत्रता। तो हमारा आत्मविश्वास पूरी तरह से टूट गया। हम पराधीन हो गए। अब हमारे अंदर अपने विचार आना खत्म हो गए। स्वदेशी अविष्कार होना बहुत दूर

की बात हो गयी। हम हर चीज के लिए पश्चिम को देखने लगे। 19वीं सदी का पुनर्जागरण इन्हीं सब समस्याओं को हल करने लिए था। इनके द्वारा समाज के पुनर्निर्माण की बात कही गयी। लेकिन ये लोग भी संकीर्ण रूप में सोचते हुए भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों के लिए स्वयं को दोषी ठहराया। साथ ही ये सुधार धर्म विशेष तक सीमित रहे। क्योंकि हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति में सामंजस्य होकर एक संस्कृति और समाज नहीं बन पाया था। इसलिए ये सुधार के प्रयास भी सीमित रूप में ही सफल रहे।

इस समय एक मौका था कि विदेशी ताकत के सामने लड़ने के लिए हिन्दू और मुस्लिम एक हो जाते और दोनों मिल कर एक नए समाज और संस्कृति का निर्माण करते, लेकिन अफ़सोस तुक्ष्य लालच के कारण ये नहीं हो पाया और अंग्रेज इन दोनों को न केवल अलग ही रहने दिया,अपितु इनके बीच दूरियां और भी बढ़ा दी। मुस्लिम में बहुसंख्यक का भय पैदा करने में कामयाब रहे जिससे न केवल साम्प्रदायिकता बढ़ी और साम्प्रदायिक दंगे हुए अपितु देश का बंटवारा हो गया। इसके बाद भी ये भय नहीं गया आज भी इनमे कायम है और साम्प्रदायिकता भी। संसाधन और पहचान की मांग न केवल मुसलमानों ने की अपितु हिन्दू धर्म में भी विभाजन होने लगा और दलित आंदोलन उभर कर सामने आया। अम्बेडकर ने इस आंदोलन को तीव्रता प्रदान की।

मध्यकाल और अंग्रेजों के काल में जातिगत कट्टरता बड़ी। जातिव्यवस्था का आज का स्वरूप अंग्रेजों के काल में बना।यद्यपि जाति और वर्णव्यवस्था प्राचीन काल से विद्यमान थी किन्तु इसका स्वरूप समय समय पर बदलता रहा है। आज का स्वरूप अग्रेजो के काल की देन है। इसी जातिवाद ने समाज को कई टुकड़ों में विभाजित करने का कार्य अंग्रेजों के समय से शुरू किया, जिसे वोट बैंक की राजनीति ने तीव्रता प्रदान की।आज भी यह समाज को बांट रहा है और समाज में घृणा और वैमनस्य फैला रहा है।

इसके अलावा साम्यवादी विचार भी भारत आया इसने एक और नए विभाजन को जन्म देने का प्रयास किया यद्यपि ये यहां ज्यादा सफल नही रहे और जाति, धर्म, क्षेत्र और आदिवासियों का दमन इन्होंने पकड़ लिया। इन्ही कारणों से आजादी भी विभाजन के बाद ही मिल पाई। जो विभाजन 12 वीं सदी में शुरू हुआ था विभाजन उसी का परिणाम था। लेकिन समाज की उस फूट को इसने भी पूरी तरह भरने का कार्य नहीं किया। वह विभाजन बना ही रहा क्योंकि विभाजन सामाजिक और सांस्कृतिक था लेकिन विभाजन क्षेत्रीय। फिर स्वतंत्रता के बाद जब लोगों की आर्थिक भूख, राजनीतिक सत्ता और पहचान की जागरूकता बढ़ी तो अनेक आधारों, जैसे भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र आदि,पर देश को तोड़ने का प्रयास

किया गया। तमिल भाषा आंदोलन, पंजाब मुद्दा, कश्मीर मुद्दा, उग्रवाद, आतंकवाद, जातिवाद इसके उदाहरण है। यह प्रयास आज भी जारी है।

आजादी के बाद की स्थिति

देश को राजनीतिक आजादी तो मिल गयी लेकिन देश में पहले से चली आ रही समस्याएं न केवल बनी रही बल्कि इनमे इजाफा हुआ। देश में पश्चिमी शिक्षा, ज्ञान विज्ञान और भाषा पर जोर दिया गया। आर्थिक प्रणाली और राजनीतिक प्रणाली पश्चिमी ही अपनाया गया। गांधी जी की बात बहुत कम सुनी गयी आजादी के बाद जो कि स्वदेशी और स्वराज की बात करते थे। स्वदेशी शिक्षा, विचार , ज्ञान, संस्कृति आदि पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। जिससे हमारे देश में न केवल आंतरिक विभाजन और विघटन बढ़ा अपितु हम सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के शिकार हो गए।या ये कहें कि हम औपनिवेशिक गुलामी की सोच से ग्रस्त हो गए। अब हम उस समय से ज्यादा गुलाम हो गए जब अंग्रेज यहां थे। हमारे अंदर आत्म विश्वास नहीं आ पाया हम विदेशी वस्तुओं, विचारों और तकनीकि के आदी होते गए।

हमने आजादी के समय देश को जोड़ने के तीन मंत्रों का प्रचार किया- राष्ट्रवाद , समाजवाद और पंथनिरपेक्षता। लेकिन ये तीनों फ्लॉप सिद्ध हुए है।यद्यपि आज भी हम इन्हें पकड़े हुये हैं। समाजवाद की हवा 1990 के दशक के आर्थिक संकट से निकल गयी। पंथनिरपेक्षता केवल अल्पसंख्यको को संतुष्ट करने का साधन हो गया। इतने विभाजन और विघटन के कारण राष्ट्रवाद तो 15 अगस्त और 26 जनवरी को ही दिखता है या फिर सेना में।

देश की ऐसी परिस्थितियों में भारत और भारत के लोग दोनों एक दूसरे से अलग होने लगे। यहां के प्रतिभाशाली लोग यहां से भागने लगे। हमारा सबसे बड़ा डायस्पोरा है। यह हमारे समाज की कमी को भी दिखता है कि लोग यहां खुश नहीं रह पा रहे। इसलिए दुनिया के बड़े वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, डॉक्टर आदि भारतीय हैं लेकिन भारतीय नागरिक नहीं है।प्रतिभा का पलायन इसीलिए हुआ क्योंकि ना तो हमारे ज्ञान का कोई महत्व है न शिक्षा का न भाषा का न संस्कृति का न धर्म का। इसलिए भारतीय लोग दूसरे भाषा,ज्ञान, और संस्कृति में अपनी प्रतिभा दिखा रहे है। लेकिन ये पलायन है इससे समग्र देश का विकास नहीं हो सकता।

निष्कर्ष

इसलिए मेरा मानना है की भारतीय बहुत प्रतिभाशाली हैं। लेकिन हमारे देश की परिस्थिति पिछले

1000 साल से ऐसी बानी हुई है कि ये ज्ञान, विज्ञान, तकनीकि में आज पिछड़ गया। यह भी सही बात है कि जो देश पिछड़ जाता है उसके ज्ञान, भाषा,संस्कृति और तकनीकि का भी महत्व दुनिया नहीं देती है। उस देश को उभरने

में बहुत ताकत और समय लगता है। इसलिए अगर देश को आगे बढ़ाना है तो देश में विद्यमान विभाजक रेखाओं को मिटाना होगा। सामाजिक और सांस्कृतिक एकता लाना होगा अपने विचार, ज्ञान, विज्ञान,धर्म , भाषा और संस्कृति को महत्व देना होगा। विश्व में जितने भी शक्तिशाली देश हैं जैसे अमेरिका, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, इजरायल आदि वे सब अपनी संस्कृति, धर्म, भाषा और स्वदेशी ज्ञान व तकनीकि के विकास से ही शक्तिशाली बनें हैं। इससे देश में एकता आती है और राष्ट्रवाद मजबूत होता है। साथ ही स्वदेशी वस्तुओं को महत्व देने से अर्थव्यवस्था मजबूत होती है जिससे गरीबी,बेरोजगारी और भुखमरी समाप्त होती है। शिक्षा, कौशल और स्वास्थ्य का स्तर उच्च होता है। देश का आत्मविश्वास बढ़ता है। इससे हमें आपने पर गर्व होगा। तब हम विदेशी वस्तु, विचार, तकनीकी और संस्कृति की तरफ नहीं देखेंगे। हमें अपने भारतीय होने पर शर्म नहीं महसूस होगी। भारतीय प्रतिभा यहीं रखकर देश को नई ऊंचाई पर ले जाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल कपूर और अवधेश कुमार सिंह, इंडियन नॉलेज सिस्टम, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, 2010

2. जोंद्रेज और अमर सेन भारत और उसके विरोधाभास राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2018

3. डॉ शिव स्वरूप सहाय, प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, 2015

4. शंभू नाथ, भक्ति आंदोलन और उत्तर धार्मिक संकट, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023

5. प्रवीण झा, रेनेश: भारतीय नवजागरण की दास्तान, इसमाद प्रकाशन, पटना, 2021

6. हिमांशु राय, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद: एक अध्ययन, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2013

7. रामचंद्र गुहा, इंडिया आफ्टर गांधी, पेंगुइन रैंडम हाउस, गुरुग्राम, 2007